

# CLASS ORB.COM

शिक्षक: ओम सिकरवार

## भारत में राष्ट्रवाद

### Nationalism in India – Chapter 2

कक्षा 10 | इतिहास | CBSE / UP Board / State Boards / UPPSC

☑ बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)	30 प्रश्न
☐ रिक्त स्थान भरिए	20 प्रश्न
? प्रश्नोत्तर (FAQ)	20 प्रश्न
✍ लघु उत्तरीय प्रश्न	8 प्रश्न
📖 दीर्घ उत्तरीय / निबंधात्मक	3 प्रश्न
📄 मिलान तालिका	3 तालिकाएँ
🏠 UPPSC / UPSC संबंधित प्रश्न	विशेष खण्ड

इस workbook के हर प्रश्न को सोच-समझकर चुना गया है — चाहे CBSE board हो, UP Board हो, UPPSC की तैयारी हो या सिर्फ इतिहास की गहरी समझ। हर प्रश्न को पहले खुद हल करें, फिर उत्तर देखें। यही छोटी-सी आदत आपको औसत छात्र से अलग करती है।

## खण्ड अ — बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ) — 30 प्रश्न

प्रत्येक प्रश्न के लिए सबसे उचित विकल्प चुनिए, सही उत्तर और संक्षिप्त स्पष्टीकरण नीचे दिया गया है।

### 1. महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका से भारत किस वर्ष लौटे ?

अ) 1913 ब) 1914 स) 1915 द) 1919

✓ सही उत्तर: स) 1915

गाँधी जी जनवरी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे। वहाँ उन्होंने नस्लवादी कानूनों के खिलाफ सत्याग्रह का सफलतापूर्वक प्रयोग किया था।

### 2. 1917 का चम्पारण सत्याग्रह किसके विरुद्ध था ?

अ) नमक कर ब) दमनकारी नील बागान व्यवस्था स) फ़ौजी भर्ती द) रॉलट एक्ट

✓ सही उत्तर: ब) दमनकारी नील बागान व्यवस्था

गाँधी जी 1917 में बिहार के चम्पारण गए और किसानों को नील बागान की शोषणकारी व्यवस्था के खिलाफ संगठित किया।

### 3. रॉलट एक्ट (1919) ने सरकार को क्या अधिकार दिया ?

अ) नमक उत्पादन पर कर लगाने का ब) बिना मुकदमे के दो वर्ष तक राजनीतिक बंदियों को हिरासत में रखने का  
स) मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र बनाने का द) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को भंग करने का

✓ सही उत्तर: ब) बिना मुकदमे के दो वर्ष तक राजनीतिक बंदियों को हिरासत में रखने का

रॉलट एक्ट 1919 में पास हुआ। गाँधी जी ने इसे 'काला कानून' कहा और 6 अप्रैल 1919 को देशव्यापी हड़ताल का आह्वान किया।

### 4. जलियाँवाला बाग हत्याकांड कब हुआ ?

अ) 6 अप्रैल 1919 ब) 10 अप्रैल 1919 स) 13 अप्रैल 1919 द) 18 अप्रैल 1919

✓ सही उत्तर: स) 13 अप्रैल 1919

13 अप्रैल 1919 — बैसाखी का दिन। जनरल डायर ने अमृतसर के जलियाँवाला बाग में शांतिपूर्ण भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दिया। सैकड़ों निर्दोष लोग मारे गए।

### 5. मार्च 1919 में मुंबई में बनी 'खिलाफत कमेटी' किसकी सुरक्षा के लिए थी ?

अ) भारतीय मज़दूरों के अधिकार ब) ओटोमन खलीफा की शक्तियाँ स) दलितों के अधिकार द) हिंदू पुनरुत्थानवाद

✓ सही उत्तर: ब) ओटोमन खलीफा की शक्तियाँ

पहले विश्व युद्ध में ओटोमन तुर्की की हार के बाद भारत के मुसलमानों को डर था कि खलीफा पर कठोर शर्तें थोपी जाएंगी। मुहम्मद अली और शौकत अली ने खिलाफत कमेटी बनाई।

### 6. गाँधी जी की पुस्तक 'हिंद स्वराज' (1909) में उन्होंने कहा कि भारत में ब्रिटिश शासन किसके सहयोग से टिका है ?

अ) ब्रिटिश सैन्य शक्ति ब) भारतीय राजाओं की कमज़ोरी स) भारतीयों के सहयोग से द) हिंदू-मुस्लिम विभाजन से

✓ सही उत्तर: स) भारतीयों के सहयोग से

गाँधी जी का तर्क था — ब्रिटिश राज भारतीयों के सहयोग से चल रहा है। अगर भारतीय सहयोग न दें तो एक वर्ष में राज धराशायी हो जाएगा — यही असहयोग आंदोलन की नींव थी।

### 7. असहयोग कार्यक्रम को कांग्रेस ने किस अधिवेशन में औपचारिक रूप से अपनाया ?

अ) कलकत्ता, सितम्बर 1920 ब) नागपुर, दिसम्बर 1920 स) लाहौर, दिसम्बर 1929 द) बम्बई, जनवरी 1921

✓ सही उत्तर: ब) नागपुर, दिसम्बर 1920

दिसम्बर 1920 के नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में असहयोग कार्यक्रम औपचारिक रूप से अपनाया गया और जनवरी 1921 में आंदोलन शुरू हुआ।

8. 1921-22 के बीच विदेशी कपड़े का आयात Rs 102 करोड़ से घटकर कितना हो गया ?

अ) Rs 25 करोड़ ब) Rs 57 करोड़ स) Rs 80 करोड़ द) Rs 40 करोड़

✓ सही उत्तर: ब) Rs 57 करोड़

असहयोग आंदोलन में विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई, इसका तत्काल आर्थिक असर हुआ — आयात आधा हो गया।

9. अवध में किसान आंदोलन किसके नेतृत्व में हुआ ?

अ) अल्लूरी सीताराम राजू ब) बाबा रामचंद्र स) मुहम्मद अली द) मोतीलाल नेहरू

✓ सही उत्तर: ब) बाबा रामचंद्र

अवध के किसानों का नेतृत्व बाबा रामचंद्र ने किया — एक संन्यासी जो पहले फिजी में बंधुआ मजदूर रहे थे। आंदोलन तालुकदारों के मनमाने लगान और बेगार के विरुद्ध था।

10. इनलैंड एमिग्रेशन एक्ट 1859 के अंतर्गत असम के बागान मजदूरों पर क्या प्रतिबंध था ?

अ) वे ट्रेड यूनियन नहीं बना सकते थे ब) वे बिना अनुमति बागान नहीं छोड़ सकते थे स) उन्हें भूमि का स्वामित्व नहीं मिल सकता था द) वे कांग्रेस में शामिल नहीं हो सकते थे

✓ सही उत्तर: ब) वे बिना अनुमति बागान नहीं छोड़ सकते थे

यह कानून मजदूरों को बागान से बाँधे रखता था। असहयोग की खबर सुनकर हज़ारों मजदूर भाग निकले — पर रास्ते में पकड़े गए और पुलिस ने उनकी बेरहमी से पिटाई की।

11. अल्लूरी सीताराम राजू ने कहाँ विद्रोह का नेतृत्व किया ?

अ) बिहार का चम्पारण ब) आंध्र प्रदेश की गुड्डेम पहाड़ियाँ स) गुजरात का बारडोली द) उत्तर प्रदेश का अवध

✓ सही उत्तर: ब) आंध्र प्रदेश की गुड्डेम पहाड़ियाँ

गुड्डेम पहाड़ियों में 1920 के दशक में अल्लूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में आदिवासी गुरिल्ला विद्रोह फैला। उन्हें 1924 में पकड़कर फाँसी दी गई और वे लोक-नायक बन गए।

12. गाँधी जी ने फरवरी 1922 में असहयोग आंदोलन किस घटना के बाद वापस लिया ?

अ) अमृतसर ब) लाहौर स) चौरी चौरा, गोरखपुर द) बारडोली

✓ सही उत्तर: स) चौरी चौरा, गोरखपुर

गोरखपुर के चौरी चौरा में फरवरी 1922 में एक शांतिपूर्ण जुलूस हिंसक हो गया। पुलिस थाने में आग लगाई गई जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गए। गाँधी जी ने तुरंत आंदोलन वापस ले लिया।

13. कांग्रेस के भीतर स्वराज पार्टी किसने बनाई ?

अ) गाँधी और नेहरू ब) सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरू स) बाल गंगाधर तिलक द) सुभाष चंद्र बोस

✓ सही उत्तर: ब) सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरू

सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरू ने स्वराज पार्टी बनाई — विधान परिषदों में बैठकर अंदर से सुधार करने की रणनीति अपनाने के लिए।

14. 1928 में साइमन कमीशन के भारत आने पर उसे किस नारे से स्वागत किया गया ?

अ) 'भारत छोड़ो' ब) 'वंदे मातरम्' स) 'साइमन गो बैक' द) 'करो या मरो'

✓ सही उत्तर: स) 'साइमन गो बैक'

साइमन कमीशन में एक भी भारतीय सदस्य नहीं था। कांग्रेस, मुस्लिम लीग — सभी दलों ने प्रदर्शनों में 'साइमन गो बैक' का नारा लगाया। लाला लाजपत राय एक शांतिपूर्ण प्रदर्शन में पुलिस की लाठियों का शिकार हुए।

15. 'पूर्ण स्वराज' की माँग को किस कांग्रेस अधिवेशन में औपचारिक रूप दिया गया ?

अ) कलकत्ता 1920 ब) नागपुर 1920 स) लाहौर 1929 द) कराची 1931

✓ सही उत्तर: स) लाहौर 1929

दिसम्बर 1929 के लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में पूर्ण स्वराज की माँग औपचारिक रूप से अपनाई गई। 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस घोषित किया गया।

16. गाँधी जी का प्रसिद्ध दांडी मार्च किस तिथि को शुरू हुआ ?

अ) 26 जनवरी 1930 ब) 12 मार्च 1930 स) 6 अप्रैल 1930 द) 31 जनवरी 1930

✓ सही उत्तर: ब) 12 मार्च 1930

12 मार्च 1930 को गाँधी जी अपने 78 विश्वस्त साथियों के साथ साबरमती आश्रम से दांडी की ओर चल पड़े। यह 240 मील की यात्रा थी।

17. गाँधी जी ने दांडी पहुँचकर नमक कानून किस दिन तोड़ा ?

अ) 12 मार्च 1930 ब) 31 जनवरी 1930 स) 6 अप्रैल 1930 द) 5 मार्च 1931

✓ सही उत्तर: स) 6 अप्रैल 1930

6 अप्रैल 1930 को गाँधी जी दांडी पहुँचे और समुद्र के पानी को उबालकर नमक बनाया — कानून तोड़ा। इस प्रकार सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ।

18. गाँधी-इरविन समझौता किस माह में हुआ ?

अ) जनवरी 1930 ब) दिसम्बर 1930 स) मार्च 1931 द) सितम्बर 1932

✓ सही उत्तर: स) मार्च 1931

मार्च 1931 में गाँधी-इरविन समझौते के तहत गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन अस्थायी रूप से स्थगित किया और द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने को तैयार हुए।

19. पूना समझौता (सितम्बर 1932) किनके बीच हुआ ?

अ) गाँधी और जिन्ना ब) गाँधी और लॉर्ड इरविन स) गाँधी और डॉ. बी.आर. अम्बेडकर द) गाँधी और मोतीलाल नेहरू

✓ सही उत्तर: स) गाँधी और डॉ. बी.आर. अम्बेडकर

जब ब्रिटिश सरकार ने अम्बेडकर की अलग निर्वाचन क्षेत्र की माँग मान ली, तो गाँधी जी ने आमरण अनशन शुरू किया। अंततः पूना समझौता हुआ जिसमें दलितों को आरक्षित सीटें मिलीं।

20. भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंडल संघ (FICCI) की स्थापना किस वर्ष हुई ?

अ) 1920 ब) 1924 स) 1927 द) 1930

✓ सही उत्तर: स) 1927

FICCI की स्थापना 1927 में हुई। पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास और जी.डी. बिड़ला जैसे उद्योगपतियों ने इसे बनाया और सविनय अवज्ञा आंदोलन को आर्थिक समर्थन दिया।

21. 'भारत माता' की प्रसिद्ध छवि किसने चित्रित की ?

अ) रवि वर्मा ब) अबनींद्रनाथ टैगोर स) नंदलाल बोस द) रवींद्रनाथ टैगोर

✓ सही उत्तर: ब) अबनींद्रनाथ टैगोर

स्वदेशी आंदोलन के दौरान अबनींद्रनाथ टैगोर ने भारत माता को एक शांत, आध्यात्मिक तपस्वी के रूप में चित्रित किया — ज्ञान, भोजन और वस्त्र प्रदान करती हुई।

22. 'वंदे मातरम्' की रचना किसने की ?

अ) रवींद्रनाथ टैगोर ब) बाल गंगाधर तिलक स) बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द) बिपिन चंद्र पाल

✓ सही उत्तर: स) बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने 1870 के दशक में मातृभूमि को समर्पित गीत 'वंदे मातरम्' लिखा। यह उनके उपन्यास 'आनंदमठ' में शामिल हुआ और स्वदेशी आंदोलन का राष्ट्रगान बन गया।

23. 1928 का बारडोली सत्याग्रह किसके विरुद्ध था ?

अ) नमक कर ब) भू-राजस्व में वृद्धि स) रॉलट एक्ट द) विदेशी कपड़ा आयात

✓ सही उत्तर: ब) भू-राजस्व में वृद्धि

बारडोली सत्याग्रह 1928 में गुजरात में वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में हुआ। यह औपनिवेशिक सरकार द्वारा भू-राजस्व में की गई मनमानी वृद्धि के विरुद्ध था। इसकी सफलता से पटेल को 'सरदार' की उपाधि मिली।

24. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने 'दलित वर्ग संघ' (Depressed Classes Association) किस वर्ष स्थापित किया ?

अ) 1920 ब) 1925 स) 1930 द) 1932

✓ सही उत्तर: स) 1930

1930 में अम्बेडकर ने दलितों को 'दलित वर्ग संघ' में संगठित किया। वे द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र की माँग लेकर गाँधी जी से टकराए।

25. 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने बम्बई अधिवेशन में किस तिथि को पास किया ?

अ) 14 जुलाई 1942 ब) 8 अगस्त 1942 स) 15 अगस्त 1942 द) 26 जनवरी 1942

✓ सही उत्तर: ब) 8 अगस्त 1942

8 अगस्त 1942 को बम्बई के गोवालिया टैंक मैदान में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास किया। गाँधी जी ने अपना प्रसिद्ध 'करो या मरो' भाषण दिया।

26. 'बेगार' (Begar) का अर्थ है —

अ) भू-राजस्व का एक प्रकार ब) बिना किसी भुगतान के किया गया ज़बरदस्ती का श्रम स) महाजन द्वारा दिया गया कृषि ऋण द) सामूहिक भूमि पर पशु चराने का अधिकार

✓ सही उत्तर: ब) बिना किसी भुगतान के किया गया ज़बरदस्ती का श्रम

बेगार उस अनिवार्य अवैतनिक श्रम को कहते हैं जो ग्रामीणों को ज़मींदार या सरकार के लिए करना पड़ता था — बिना किसी मज़दूरी के।

27. स्वदेशी आंदोलन के दौरान बंगाल में डिज़ाइन किए गए तिरंगे झंडे में क्या था ?

अ) केसरिया, सफ़ेद और हरा रंग तथा अशोक चक्र ब) आठ ब्रिटिश भारत के प्रांतों का प्रतिनिधित्व करते आठ कमल के फूल और अर्धचंद्र स) बीच में चरखा द) लाल, सफ़ेद और नीला रंग तथा बाघ का प्रतीक

✓ सही उत्तर: ब) आठ ब्रिटिश भारत के प्रांतों का प्रतिनिधित्व करते आठ कमल के फूल और अर्धचंद्र

स्वदेशी आंदोलन में बंगाल में एक तिरंगा (लाल, हरा, पीला) डिज़ाइन हुआ जिसमें आठ कमल तथा एक अर्धचंद्र — हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतीक — था।

28. सविनय अवज्ञा आंदोलन में किस समूह ने सबसे कम उत्साह से भाग लिया ?

अ) गुजरात के अमीर किसान ब) शहरी उच्च जाति की महिलाएँ स) औद्योगिक मज़दूर वर्ग द) व्यापारी वर्ग

✓ सही उत्तर: स) औद्योगिक मज़दूर वर्ग

औद्योगिक मज़दूर वर्ग — नागपुर क्षेत्र को छोड़कर — बड़ी संख्या में सविनय अवज्ञा आंदोलन में शामिल नहीं हुए। उन्हें डर था कि उनकी विशिष्ट माँगें — मज़दूरी और काम की बेहतर परिस्थितियाँ — राष्ट्रवादी एजेंडे में दब जाएंगी।

29. 'द फोकलोर ऑफ़ सदर्न इंडिया' — तमिल लोक-कथाओं का विशाल चार-खंडीय संग्रह — किसने प्रकाशित किया ?

अ) रवींद्रनाथ टैगोर ब) नतेसा शास्त्री स) बंकिम चंद्र द) अबनींद्रनाथ टैगोर

✓ सही उत्तर: ब) नतेसा शास्त्री

मद्रास में नतेसा शास्त्री ने तमिल लोक-कथाओं का विशाल चार-खंडीय संग्रह प्रकाशित किया। उनका मानना था कि लोक-साहित्य राष्ट्रीय साहित्य है — जनता की असली सोच का सबसे विश्वसनीय प्रकटीकरण।

30. गाँधी जी के चरखे और खादी का प्रतीकात्मक महत्त्व क्या था ?

अ) सैन्य शक्ति और राष्ट्रीय रक्षा ब) आत्मनिर्भरता, श्रम की गरिमा और ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का विरोध स) हिंदू-मुस्लिम सौहार्द द) दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र

✓ सही उत्तर: ब) आत्मनिर्भरता, श्रम की गरिमा और ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का विरोध

चरखा गाँधीवादी स्वावलंबन का प्रतीक बन गया। स्वराज झंडे पर चरखा था। मार्च में झंडा हाथ में लेकर चलना प्रतिरोध और राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक था।

## खण्ड ब — रिक्त स्थान भरिए — 20 प्रश्न

प्रत्येक रिक्त स्थान को उचित शब्द या वाक्यांश से भरिए। उत्तर देखने से पहले स्वयं प्रयास करें।

1. महात्मा गाँधी जनवरी \_\_\_\_\_ में भारत लौटे।

✓ उत्तर: 1915

गाँधी जी जनवरी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे जहाँ उन्होंने नस्लवादी कानूनों के विरुद्ध सत्याग्रह अभियान चलाए थे।

2. 1917 में गाँधी जी ने बिहार के चम्पारण में \_\_\_\_\_ बागान व्यवस्था के विरुद्ध सत्याग्रह का आयोजन किया।

✓ उत्तर: नील / इंडिगो

चम्पारण सत्याग्रह भारत में गाँधी जी का पहला संगठित जन-सत्याग्रह था जो नील उत्पादन की शोषणकारी व्यवस्था के विरुद्ध था।

3. रॉलट एक्ट 1919 ने सरकार को बिना \_\_\_\_\_ के दो वर्ष तक राजनीतिक बंदियों को हिरासत में रखने की शक्ति दी।

✓ उत्तर: मुकदमे / trial

रॉलट एक्ट ने नागरिक स्वतंत्रताओं पर सीधा हमला किया। गाँधी जी ने इसे 'काला कानून' कहा।

4. 13 अप्रैल 1919 को जनरल \_\_\_\_\_ ने अमृतसर के जलियाँवाला बाग में शांतिपूर्ण भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दिया।

✓ उत्तर: डायर (Dyer)

जनरल डायर ने बाद में कहा था कि उसका उद्देश्य 'नैतिक प्रभाव डालना' और सत्याग्रहियों में 'आतंक और विस्मय की भावना पैदा करना' था — एक बयान जिसने दुनिया को स्तब्ध कर दिया।

5. खिलाफत कमेटी मार्च 1919 में मुहम्मद अली और \_\_\_\_\_ अली के नेतृत्व में बनी।

✓ उत्तर: शौकत

मुहम्मद अली और शौकत अली — ये दोनों भाई खिलाफत आंदोलन के मुख्य नेता थे। उन्होंने गाँधी जी के साथ मिलकर खिलाफत-असहयोग गठबंधन बनाया।

6. असहयोग कार्यक्रम दिसम्बर 1920 के \_\_\_\_\_ कांग्रेस अधिवेशन में औपचारिक रूप से अपनाया गया।

✓ उत्तर: नागपुर

नागपुर कांग्रेस में समझौता हुआ और असहयोग कार्यक्रम पास हुआ। जनवरी 1921 में आंदोलन शुरू हुआ।

7. 1921-22 के बीच विदेशी कपड़े का आयात Rs 102 करोड़ से घटकर Rs \_\_\_\_\_ करोड़ रह गया।

✓ उत्तर: 57

विदेशी कपड़ों के बहिष्कार का तत्काल आर्थिक असर दिखा — आयात लगभग आधा हो गया — जो असहयोग आंदोलन की व्यावहारिक सफलता का प्रमाण था।

8. अवध के किसानों का नेतृत्व \_\_\_\_\_ ने किया — एक संन्यासी जो पहले फिजी में बंधुआ मज़दूर रहे थे।

✓ उत्तर: बाबा रामचंद्र

बाबा रामचंद्र ने अवध के किसानों को तालुकदारों के विरुद्ध संगठित किया। जवाहरलाल नेहरू 1920 में अवध के गाँवों का दौरा करने गए।

9. असहयोग आंदोलन फरवरी 1922 में \_\_\_\_\_ (गोरखपुर) की हिंसक घटना के बाद वापस लिया गया।

✓ उत्तर: चौरी चौरा

चौरी चौरा में पुलिस थाने को आग लगाई गई जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गए। गाँधी जी ने तुरंत आंदोलन वापस ले लिया।

10. सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरू ने कांग्रेस के भीतर \_\_\_\_\_ पार्टी बनाई।

✓ उत्तर: स्वराज

स्वराज पार्टी विधान परिषदों में प्रवेश कर अंदर से औपनिवेशिक नीतियों का विरोध करना चाहती थी।

11. साइमन कमीशन (1928) में एक भी \_\_\_\_\_ सदस्य नहीं था।

✓ उत्तर: भारतीय

सभी सदस्य अंग्रेज थे। इसी कारण सभी दलों ने 'साइमन गो बैक' के नारों के साथ इसका स्वागत किया।

12. दिसम्बर 1929 के लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में \_\_\_\_\_ की अध्यक्षता में पूर्ण स्वराज की माँग औपचारिक रूप से अपनाई गई।

✓ उत्तर: जवाहरलाल नेहरू

नेहरू की अध्यक्षता में हुए लाहौर अधिवेशन ने स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा दी। 26 जनवरी 1930 को प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

13. गाँधी जी ने \_\_\_\_\_ मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से अपने 78 विश्वस्त साथियों के साथ दांडी यात्रा शुरू की।

✓ उत्तर: 12

12 मार्च 1930 को दांडी मार्च शुरू हुआ। 240 मील की यात्रा में 24 दिन लगे। रास्ते में हज़ारों लोग जुड़ते गए।

14. 6 अप्रैल 1930 को गाँधी जी ने दांडी में समुद्र के पानी को उबालकर \_\_\_\_\_ बनाया और क़ानून तोड़ा।

✓ उत्तर: नमक

नमक सबसे उचित प्रतीक था क्योंकि यह अमीर-गरीब, हिंदू-मुसलमान — सभी इस्तेमाल करते थे। नमक कर ब्रिटिश शासन का सबसे दमनकारी चेहरा था।

15. गाँधी-इरविन समझौता \_\_\_\_\_ 1931 में हुआ जिसके बाद गाँधी जी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने लंदन गए।

✓ उत्तर: मार्च

गाँधी-इरविन समझौते ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को अस्थायी रूप से स्थगित किया। लंदन सम्मेलन निरर्थक साबित हुआ।

16. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने 1930 में दलितों को \_\_\_\_\_ संघ में संगठित किया।

✓ उत्तर: दलित वर्ग / Depressed Classes

इस संघ के माध्यम से अम्बेडकर ने दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र की माँग की — ताकि उनका प्रतिनिधित्व वास्तविक हो।

17. जब ब्रिटिश सरकार ने 1932 में अम्बेडकर की माँग मान ली, तो गाँधी जी ने जेल में \_\_\_\_\_ आमरण अनशन की घोषणा की।

✓ उत्तर: आमरण अनशन / उपवास / fast unto death

गाँधी जी का तर्क था कि अलग निर्वाचन क्षेत्र हिंदू समाज को स्थायी रूप से विभाजित कर देगा। अम्बेडकर पर नैतिक दबाव पड़ा और पूना समझौता हुआ।

18. स्वदेशी आंदोलन के दौरान भारत माता की प्रसिद्ध छवि \_\_\_\_\_ ने बनाई।

✓ उत्तर: अबनींद्रनाथ टैगोर

अबनींद्रनाथ टैगोर की भारत माता — एक शांत, आध्यात्मिक तपस्वी — राष्ट्रवादी कल्पना की सबसे शक्तिशाली छवियों में से एक बन गई।

19. बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित 'वंदे मातरम्' \_\_\_\_\_ आंदोलन से गहराई से जुड़ा था।

✓ उत्तर: स्वदेशी

वंदे मातरम् स्वदेशी आंदोलन का राष्ट्रगान बन गया। रवींद्रनाथ टैगोर ने भी इस दौरान लोकगीत और पद्य संग्रहीत करने का आंदोलन चलाया।

20. कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव \_\_\_\_\_ में 14 जुलाई 1942 को पास किया।

✓ उत्तर: वर्धा

14 जुलाई 1942 को वर्धा में कांग्रेस कार्यकारिणी ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास किया। 8 अगस्त 1942 को बम्बई में AICC ने इसकी पुष्टि की और गाँधी जी ने 'करो या मरो' का नारा दिया।

## खण्ड स — प्रश्नोत्तर (FAQ) — 20 महत्वपूर्ण प्रश्न

ये Board परीक्षा और UPPSC दोनों के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। प्रश्न और उत्तर दोनों ध्यान से पढ़ें।

### प्र.1. सत्याग्रह क्या है? गाँधी जी ने इसका भारत में उपयोग कैसे किया?

सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है 'सत्य की शक्ति' या 'आत्मबल'। यह गाँधी जी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में विकसित जन-आंदोलन की नई पद्धति थी। इसका मूल विचार था — यदि संघर्ष न्यायोचित है तो शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं। सत्याग्रही अपने विरोधी को पराजित नहीं करता — उसे सच देखने पर विवश करता है। अहिंसा सर्वोच्च धर्म है।

भारत में गाँधी जी ने सत्याग्रह का प्रयोग तीन प्रमुख स्थानों पर किया: चम्पारण, बिहार (1917) — नील बागान व्यवस्था के विरुद्ध; खेड़ा, गुजरात (1917) — किसानों के भू-राजस्व के लिए; अहमदाबाद, गुजरात (1918) — सूती मिल मज़दूरों के लिए। इन तीनों सत्याग्रहों ने साबित किया कि भारतीय धरती पर सत्याग्रह सफल हो सकता है।

### प्र.2. रॉलट एक्ट ने इतना तीव्र विरोध क्यों उत्पन्न किया?

रॉलट एक्ट 1919 ने कई कारणों से तीव्र विरोध उत्पन्न किया। पहला — यह नागरिक स्वतंत्रताओं पर सीधा हमला था। मुकदमे का अधिकार न्याय का मूल सिद्धांत है। यह कानून इसे समाप्त करता था।

दूसरा — यह विधान परिषद में सभी भारतीय सदस्यों के एकमत विरोध के बावजूद पास किया गया। इससे औपनिवेशिक सरकार की भारतीय मतों के प्रति घोर उपेक्षा स्पष्ट हुई।

तीसरा — यह पहले विश्व युद्ध के ठीक बाद आया जब भारतीयों ने भारी बलिदान दिए थे और उम्मीद थी कि उन्हें अधिक स्वशासन मिलेगा। इसके बदले दमनकारी कानून मिला — विश्वासघात की भावना बहुत गहरी थी।

गाँधी जी ने 6 अप्रैल 1919 को देशव्यापी हड़ताल का आह्वान किया। इस प्रतिक्रिया से स्पष्ट हुआ कि विरोध वास्तव में राष्ट्रव्यापी था — क्षेत्र, धर्म और वर्ग की सीमाओं से परे।

### प्र.3. असहयोग-खिलाफत आंदोलन में विभिन्न सामाजिक समूहों ने कैसे भाग लिया?

जनवरी 1921 में शुरू हुए असहयोग आंदोलन में विभिन्न सामाजिक समूह अपनी-अपनी आकांक्षाओं और शिकायतों के साथ शामिल हुए।

शहरों में: पढ़े-लिखे मध्यवर्गीय पेशेवरों — विद्यार्थियों, वकीलों, शिक्षकों — ने सरकारी संस्थाओं का बहिष्कार किया। हज़ारों छात्रों ने school-college छोड़े, वकीलों ने अदालत छोड़ी। विदेशी कपड़ों की होलियाँ जलाई गईं।

ग्रामीण क्षेत्रों में: अवध में बाबा रामचंद्र के नेतृत्व में किसान तालुकदारों के विरुद्ध उठे। आंध्र प्रदेश की गुडेम पहाड़ियों में अल्लूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में आदिवासी गुरिल्ला विद्रोह हुआ।

असम में: बागान मज़दूरों ने इनलैंड एमिग्रेशन एक्ट की अवज्ञा की, बागान छोड़े और घर जाने की कोशिश की — पर रास्ते में पकड़े गए।

आंदोलन ने स्पष्ट किया कि कांग्रेस नेताओं का स्वराज और किसानों-मज़दूरों का स्वराज — दोनों बिल्कुल अलग थे।

### प्र.4. गाँधी जी ने नमक को सविनय अवज्ञा के प्रतीक के रूप में क्यों चुना?

नमक का चुनाव राजनीतिक रणनीति का एक अत्यंत कुशल उदाहरण था।

पहला — सार्वभौमिकता: नमक हर भारतीय उपयोग करता था — अमीर-गरीब, हिंदू-मुसलमान, शहरी-ग्रामीण। नमक कर एकमात्र ऐसा मुद्दा था जो सभी को समान रूप से प्रभावित करता था।

दूसरा — प्रतीकात्मक महत्त्व: नमक पर सरकारी एकाधिकार और उस पर कर — एक बुनियादी ज़रूरत पर जुल्म — औपनिवेशिक शोषण का सबसे स्पष्ट चेहरा था।

तीसरा — व्यावहारिक सरलता: समुद्र के किनारे कोई भी नमक बना सकता था। यह एक साथ प्रतीकात्मक विद्रोह और व्यावहारिक आत्मनिर्भरता दोनों था।

चौथा — धियेटर: 78 स्वयंसेवकों के साथ 240 मील की यात्रा — 24 दिन — अंतर्राष्ट्रीय मीडिया का अनुसरण — यह राजनीतिक कला थी। 6 अप्रैल 1930 को दांडी में नमक बनाने की घटना स्वतंत्रता संग्राम की परिभाषित छवियों में से एक बन गई।

### प्र.5. सविनय अवज्ञा आंदोलन की सीमाएँ क्या थीं? कुछ समूह इससे दूर क्यों रहे?

औद्योगिक मज़दूर वर्ग नागपुर को छोड़कर बड़ी संख्या में शामिल नहीं हुआ। उद्योगपति कांग्रेस के करीब आए तो मज़दूर दूर हो गए — डर था कि उनकी विशिष्ट माँगें — मज़दूरी, काम की परिस्थितियाँ — दब जाएंगी।

गरीब किसान उत्साही थे पर उनके लक्ष्य — 'no-rent campaigns' — से कांग्रेस असहज थी क्योंकि इससे ज़मींदार नाराज़ होते।

दलित, अम्बेडकर के नेतृत्व में, कांग्रेस से सतर्क थे। उन्हें डर था कि 'स्वराज' का मतलब ब्रिटिश शासन की जगह उच्च जाति का शासन होगा। पूना समझौते का विवाद इसी अविश्वास का प्रतिबिम्ब था।

मुस्लिम नेताओं का एक बड़ा वर्ग भी आंदोलन से दूर रहा। खिलाफत गठबंधन के टूटने के बाद और 1920 के दशक के साम्प्रदायिक दंगों के बाद कांग्रेस को हिंदू संगठन माना जाने लगा था।

### प्र.6. भारत में विविध समुदायों में 'मिलकर रहने की भावना' कैसे विकसित हुई?

राष्ट्रीय अपनेपन की भावना दो स्तरों पर विकसित हुई — राजनीतिक संघर्ष और सांस्कृतिक प्रक्रियाएँ।

राजनीतिक स्तर पर — उपनिवेशवाद के शोषण की साझी पीड़ा ने विभिन्न समुदायों के बीच बंधन बनाए। 1920 और 1930 के दशक के महान जन-आंदोलनों ने — भले ही अस्थायी रूप से — उन लोगों को एकत्रित किया जो पहले अपने को अलग-अलग समुदायों का हिस्सा मानते थे।

सांस्कृतिक स्तर पर — 'भारत माता' की छवि ने राष्ट्र के अमूर्त विचार को भावनात्मक रूप दिया। 'वंदे मातरम्' ने उसे एक गीत दिया। इतिहास की पुनर्व्याख्या ने गर्व और क्रोध दोनों को प्रेरित किया। लोक-परंपराओं के पुनरुद्धार ने आंदोलन को आम लोगों की सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ा।

हालाँकि यह एकता कभी पूर्ण नहीं हुई। जो 'गौरवशाली अतीत' बनाया जा रहा था वह मुख्यतः हिंदू प्रतीकों पर आधारित था। मुसलमान, दलित और अन्य अल्पसंख्यक समुदाय अक्सर इस राष्ट्रवादी कल्पना के हाशिये पर महसूस करते थे।

### प्र.7. असहयोग आंदोलन (1920-22) और सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34) की तुलना करें।

पद्धति में अंतर: असहयोग आंदोलन में मुख्यतः वापसी थी — ब्रिटिश संस्थाओं से सहयोग न करना। सविनय अवज्ञा आगे गयी — लोगों से कानून तोड़ने को कहा: नमक बनाओ, कर मत दो, जंगलों में घुसो।

व्यापकता में अंतर: सविनय अवज्ञा कहीं अधिक व्यापक और तीव्र था। दांडी मार्च ने अंतर्राष्ट्रीय ध्यान खींचा। लगभग एक लाख लोग गिरफ्तार हुए।

सामाजिक रचना में अंतर: सविनय अवज्ञा में महिलाओं की भागीदारी असाधारण रूप से अधिक थी — पहली बार इस पैमाने पर। व्यापारी वर्ग ने भी अधिक सक्रिय रूप से FICCI के माध्यम से समर्थन दिया।

दोनों आंदोलन अपने घोषित उद्देश्यों को पूरी तरह प्राप्त किए बिना वापस लिए गए — असहयोग आंदोलन चौरी चौरा के बाद, सविनय अवज्ञा गाँधी-इरविन समझौते के बाद।

### प्र.8. जलियाँवाला बाग हत्याकांड का स्वतंत्रता संग्राम में क्या महत्त्व था?

13 अप्रैल 1919 का जलियाँवाला बाग हत्याकांड स्वतंत्रता संग्राम का एक निर्णायक मोड़ था।

तत्काल प्रभाव: पूरे उत्तर भारत में हड़तालें, पुलिस-झड़पें और सरकारी इमारतों पर हमले हुए। भारी दमन हुआ — सत्याग्रहियों को पेट के बल रेंगने पर मजबूर किया गया, पंजाब के गाँवों पर बमबारी हुई।

दीर्घकालिक प्रभाव: रवींद्रनाथ टैगोर ने नाइटहुड की उपाधि वापस कर दी। उन पढ़े-लिखे भारतीयों के लिए जिन्हें ब्रिटिश न्याय पर कुछ विश्वास था — यह हत्याकांड एक निर्णायक मोहभंग था।

गाँधी जी के लिए इसने स्पष्ट किया कि औपनिवेशिक सरकार जब चुनौती दी जाए तो असीमित हिंसा करने में सक्षम है। 1920 के असहयोग आंदोलन की नींव में जलियाँवाला बाग की नैतिक पीड़ा थी।

सामूहिक स्मृति में — यह हत्याकांड दशकों तक औपनिवेशिक बर्बरता का प्रतीक बना रहा — नेताओं और आम जनता दोनों के लिए।

### प्र.9. राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका और उसकी सीमाएँ समझाइए।

1920 और 1930 के दशक में महिलाओं ने पहली बार अभूतपूर्व पैमाने पर सार्वजनिक राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन में हज़ारों महिलाएँ घर से बाहर निकलीं — पहली बार। उन्होंने प्रदर्शन मार्च में भाग लिया, नमक बनाया, विदेशी कपड़े और शराब की दुकानों के बाहर धरना दिया, जेल गईं। शहरों में वे उच्च जाति के परिवारों से थीं, गाँवों में गरीब किसान परिवारों से।

परंतु एक विरोधाभास था। गाँधी जी ने महिलाओं की भागीदारी को राष्ट्रीय कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया — पर यह कर्तव्य उनकी पत्नी-माँ की भूमिका का विस्तार मात्र था। गाँधी जी स्वयं मानते थे कि महिलाओं का प्राथमिक कर्तव्य घर-परिवार की देखभाल है। कांग्रेस भी लंबे समय तक महिलाओं को संगठन में नेतृत्व की भूमिका देने में हिचकिचाती रही — केवल 'प्रतीकात्मक उपस्थिति' पर्याप्त मानी जाती थी।

इस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में लाया — पर उन्हें पूर्ण समान नागरिक के रूप में मान्यता नहीं दी।

### प्र.10. पूना समझौता क्या था और यह विवादास्पद क्यों है ?

पूना समझौता सितम्बर 1932 में महात्मा गाँधी और डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के बीच हुआ — अत्यंत नाटकीय परिस्थितियों में।

पृष्ठभूमि: 1931 के द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में अम्बेडकर ने दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र की माँग की। उनका तर्क था: बिना इस सुरक्षा के दलित प्रतिनिधि सदा उच्च जाति के मतों पर निर्भर रहेंगे। 1932 में ब्रिटिश सरकार ने यह माँग मान ली।

गाँधी जी ने यरवदा जेल में आमरण अनशन की घोषणा की। उनका तर्क था — अलग निर्वाचन क्षेत्र हिंदू समाज को स्थायी रूप से विभाजित कर देगा। अम्बेडकर पर भारी नैतिक दबाव पड़ा। यदि गाँधी जी मरते तो दलित समुदाय पर हिंसा की आशंका थी। अंततः अम्बेडकर ने समझौता किया — दलितों को अधिक आरक्षित सीटें मिलीं पर संयुक्त निर्वाचन क्षेत्र में।

यह आज भी विवादास्पद है। अम्बेडकर ने बाद में लिखा कि गाँधी जी ने नैतिक ज़बरदस्ती से दलितों का एक वैध राजनीतिक अधिकार छीना।

### प्र.11. लोक-परंपराओं ने भारतीय राष्ट्रीय पहचान निर्माण में क्या भूमिका निभाई ?

19वीं सदी के अंत में राष्ट्रवादी बुद्धिजीवियों ने एक महत्वपूर्ण समस्या पहचानी — स्वतंत्रता के तर्क केवल पढ़े-लिखे अल्पसंख्यक वर्ग तक पहुँचते थे। करोड़ों निरक्षर लोगों तक पहुँचाने के लिए एक अलग भाषा चाहिए थी।

लोक-परंपराओं का पुनरुद्धार इसका उत्तर था। लोकगीत, लोक-कथाएँ, ग्राम परंपराएँ — ये प्रमाण थे कि एक जीवित भारतीय संस्कृति है जो उपनिवेशवाद से पहले भी थी और उसके बावजूद टिकी हुई है।

मद्रास में नतेसा शास्त्री का तमिल लोक-कथाओं का चार-खंडीय संग्रह, बंगाल में रवींद्रनाथ टैगोर का लोकगीत-संग्रह — ये सांस्कृतिक परियोजनाएँ भी राजनीतिक थीं। इनका तर्क था: भारत के पास अपनी सांस्कृतिक संपदा है — उसे यूरोपीय मानकों पर खुद को नापने की ज़रूरत नहीं।

लोक-पुनरुद्धार ने राष्ट्रवाद को अमूर्त राजनीतिक दावे से आम जीवन की मिट्टी से जोड़ा।

### प्र.12. लाहौर कांग्रेस (1929) और 'पूर्ण स्वराज' की घोषणा का क्या महत्व था ?

दिसम्बर 1929 का लाहौर कांग्रेस अधिवेशन स्वतंत्रता आंदोलन का एक ऐतिहासिक मोड़ था।

'डोमिनियन स्टेटस' से 'पूर्ण स्वराज' की ओर यह बदलाव केवल शब्दों का नहीं था — यह एक मौलिक पुनर्परिभाषा थी। डोमिनियन स्टेटस का अर्थ था ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन। पूर्ण स्वराज का अर्थ था — ब्रिटेन से पूर्ण विच्छेद, संपूर्ण संप्रभुता।

26 जनवरी 1930 को 'स्वतंत्रता दिवस' की घोषणा ने एक अमूर्त राजनीतिक माँग को एक साझे राष्ट्रीय संकल्प में बदल दिया। यह तारीख बाद में 1950 में भारतीय संविधान लागू होने के दिन के रूप में चुनी गई — इसी इतिहास को सम्मान देते हुए।

लाहौर कांग्रेस ने दांडी मार्च की पृष्ठभूमि भी तैयार की। गाँधी जी जानते थे कि 'पूर्ण स्वराज' की अमूर्त माँग को आम जनता के रोज़मर्रे के जीवन से जोड़ना होगा — और नमक ने यह काम किया।

### प्र.13. असम के बागान मज़दूरों का अनुभव राष्ट्रीय आंदोलन की सीमाएँ क्यों उजागर करता है ?

असम के चाय बागान मज़दूरों का अनुभव भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सबसे मार्मिक प्रसंगों में से एक है।

जब असहयोग आंदोलन की खबर बागानों तक पहुँची, हज़ारों मज़दूर उत्साहित हो गए। उनके लिए 'स्वराज' का एक ठोस अर्थ था — बागान छोड़कर घर जाने की आज़ादी। 1859 के इनलैंड एमिग्रेशन एक्ट के तहत वे बागान से बिना अनुमति नहीं जा सकते थे — एक प्रकार की बंधुआ मज़दूरी।

हज़ारों मज़दूर अधिकारियों की अवज्ञा करके बागान छोड़कर घर की ओर चल पड़े। उन्हें लगा — 'गाँधी राज आ रहा है, गाँव में ज़मीन मिलेगी।'

पर वे कभी घर नहीं पहुँचे। रेलवे और स्टीमर हड़ताल की वजह से रास्ते में फँसे। पुलिस ने पकड़ा — बेरहमी से पिटाई। उनका स्वराज एक सपना ही रह गया।

यह प्रसंग बताता है कि कांग्रेस का स्वराज और देश के सबसे हाशिये पर रहने वाले मज़दूरों का स्वराज — दोनों में कितना फ़ासला था।

### प्र.14. भारत में राष्ट्रवाद के विकास में इतिहास की पुनर्व्याख्या ने क्या योगदान दिया ?

इतिहास की पुनर्व्याख्या राष्ट्रीय आंदोलन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण सांस्कृतिक परियोजना थी।

ब्रिटिश इतिहासकारों ने भारत को ऐसी भूमि के रूप में चित्रित किया जो सदा विदेशी विजेताओं के अधीन रही — खुद पर शासन करने में अक्षम। यह विचारधारा उपनिवेशवाद को 'सभ्यता का मिशन' ठहराती थी।

भारतीय राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने जवाब दिया — प्राचीन भारत की महान उपलब्धियाँ: कला, वास्तुकला, गणित, खगोलशास्त्र, दर्शन। यह 'स्वर्ण काल' उपनिवेशवाद से तबाह किया गया।

इस पुनर्व्याख्या का प्रभाव: पढ़े-लिखे भारतीयों में गर्व की भावना जगी। स्वतंत्रता की माँग एक क्रांतिकारी नवीनता नहीं बल्कि एक प्राकृतिक अवस्था की बहाली लगी।

हालाँकि एक सीमा थी: यह 'गौरवशाली अतीत' मुख्यतः हिंदू प्रतीकों में था। इससे मुसलमान, दलित और अन्य समुदाय राष्ट्रवादी कथा के हाशिये पर महसूस करते थे।

### प्र.15. हिंदू-मुस्लिम तनाव सविनय अवज्ञा काल में क्यों बढ़े ?

खिलाफत-असहयोग गठबंधन के टूटने के बाद हिंदू-मुस्लिम सम्बंध तेज़ी से बिगड़े।

1920 के दशक के मध्य से कांग्रेस का हिंदू महासभा जैसे हिंदू संगठनों से खुला जुड़ाव दिखने लगा। इससे मुसलमानों में बेचैनी बढ़ी।

धार्मिक जुलूसों में कठोरता, मस्जिद के सामने संगीत बजाने का विवाद, गौ-वध के मुद्दे — इन सब पर झड़पें बढ़ीं। हर दंगे ने दोनों समुदायों के बीच की खाई गहरी की।

राजनीतिक विवाद प्रतिनिधित्व को लेकर था। मुस्लिम नेताओं को डर था कि हिंदू बहुमत वाले स्वतंत्र भारत में मुस्लिम हितों की अनदेखी होगी। अलग निर्वाचन क्षेत्र की माँग इसी डर का प्रतिबिम्ब थी।

जब 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ, इस संदेह और अविश्वास के माहौल में मुस्लिम नेतृत्व के बड़े वर्ग के लिए एकजुट संघर्ष के आह्वान पर प्रतिक्रिया देना अत्यंत कठिन हो गया।

---

### प्र.16. 'स्वराज' का विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए क्या अर्थ था ?

'स्वराज' की अवधारणा की शक्ति और कठिनाई दोनों यही थी कि इसका अर्थ हर वर्ग के लिए अलग था।

पट्टे-लिखे मध्यवर्ग के लिए: संवैधानिक स्वशासन — संसद, नागरिक स्वतंत्रताएँ, ब्रिटिश राजनीतिक प्रभुत्व का अंत।

अवध के किसानों के लिए: तालुकदारों से मुक्ति, लगान में कमी, बेगार का अंत। कई किसानों को विश्वास था कि गाँधी राज में ज़मीन गरीबों में बाँटी जाएगी।

असम के बागान मज़दूरों के लिए: बागान छोड़ने की आज़ादी — अपने गाँव वापस जाना — ज़मीन पाना।

आंध्र के आदिवासियों के लिए: अपने पारंपरिक जंगल के अधिकारों की वापसी।

व्यापारी वर्ग के लिए: ब्रिटिश आर्थिक नियंत्रणों से मुक्त बाज़ार।

दलितों के लिए: छुआछूत के उन्मूलन के बिना स्वराज निरर्थक था।

यह बहुलता आंदोलन की शक्ति भी थी और कमज़ोरी भी।

---

### प्र.17. 'भारत छोड़ो' आंदोलन (1942) पहले के आंदोलनों से कैसे अलग था ?

भारत छोड़ो आंदोलन 1942 सभी गाँधीवादी आंदोलनों में सबसे उग्र और सबसे स्वतःस्फूर्त था।

14 जुलाई 1942 को वर्धा में कांग्रेस कार्यकारिणी ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास किया। 8 अगस्त 1942 को बम्बई में गाँधी जी का प्रसिद्ध 'करो या मरो' भाषण हुआ — "या तो हम भारत को आज़ाद कराएंगे या इसी कोशिश में मर जाएंगे।"

ब्रिटिश सरकार ने रात भर में सम्पूर्ण कांग्रेस नेतृत्व को गिरफ्तार कर लिया। फिर भी आंदोलन नहीं रुका — पहले के आंदोलनों से यही सबसे बड़ा फ़र्क था। इस बार केंद्रीय नेतृत्व के बिना भी आम लोगों ने आंदोलन को आगे बढ़ाया।

रेल लाइनें उखाड़ी गईं, तार काटे गए, सरकारी इमारतों पर हमले हुए। मातंगिनी हाज़ारा, कनकलता बरुआ, अरुणा आसफ अली और राम मनोहर लोहिया जैसे नेता उभरे।

यह आंदोलन वास्तव में जन-विद्रोह था — ऊपर से निर्देशित अभियान नहीं।

---

### प्र.18. 26 जनवरी का भारतीय इतिहास में क्या महत्त्व है ?

26 जनवरी भारतीय इतिहास में दोहरा महत्त्व रखती है।

1930 में लाहौर कांग्रेस ने 26 जनवरी को 'स्वतंत्रता दिवस' घोषित किया — वह दिन जब पूरे भारत में लोग पूर्ण स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की शपथ लेंगे। 1930 के उत्सव अपेक्षाकृत शांत रहे पर प्रतीकात्मक रूप से अत्यंत शक्तिशाली थे।

इसी ऐतिहासिक महत्त्व को सम्मान देते हुए संविधान निर्माताओं ने 26 जनवरी 1950 को — जिस दिन भारत का संविधान लागू हुआ — गणतंत्र दिवस के रूप में चुना। इस प्रकार 26 जनवरी 1930 की शपथ और 26 जनवरी 1950 का गणतंत्र — दोनों एक ही धागे से जुड़े हुए हैं।

यह स्वतंत्रता आंदोलन और गणतंत्र की स्थापना के बीच की एक खूबसूरत ऐतिहासिक निरंतरता है।

---

### प्र.19. कांग्रेस ने भारत के विविध सामाजिक समूहों में एकता बनाने की कोशिश कैसे की और कहाँ विफल रही ?

गाँधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सबसे व्यापक संभव गठबंधन बनाने की रणनीति अपनाई।

**सफलताएँ:** नमक जैसे सार्वभौमिक मुद्दे चुने, हिंदू-मुस्लिम एकता पर जोर दिया (खिलाफत आंदोलन), विभिन्न समूहों की शिकायतों को संबोधित किया।

**विफलताएँ:** कांग्रेस 'no-rent campaigns' का समर्थन करने से हिचकिचाती थी — ज़मींदार नाराज़ होते। मज़दूरों की विशिष्ट माँगें नज़रअंदाज़ की गईं — उद्योगपति नाराज़ होते। दलितों के राजनीतिक सशक्तिकरण की माँग पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। मुस्लिम विश्वास खिलाफत गठबंधन टूटने के बाद नहीं बचाया जा सका।

परिणाम — असाधारण व्यापकता वाला पर आंतरिक दरारों से भरा आंदोलन। कांग्रेस ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लोगों को एकजुट कर सकती थी — पर उनके स्वतंत्र भारत के परस्पर विरोधी सपनों को नहीं।

---

### प्र.20. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन नेताओं और जन-आंदोलनों के बीच संबंध के बारे में क्या सिखाता है ?

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन राजनीतिक नेताओं और उनके नेतृत्व में जन-आंदोलनों के जटिल, रचनात्मक और तनावपूर्ण संबंध के सबसे ज्ञानवर्धक उदाहरणों में से एक है।

गाँधी जी की प्रतिभा: नमक, चरखा, खादी जैसे प्रतीकों के माध्यम से उन्होंने भाषा, जाति और वर्ग की बाधाओं से परे आम लोगों तक पहुँचाया। स्वतंत्रता की राजनीति को एक जीवित अनुभव बनाया।

पर आंदोलन का अपना जीवन था। अवध के किसानों ने स्वराज के आह्वान को अपने तरीके से समझा। असम के मज़दूरों ने अपनी ज़रूरत के अनुसार। आदिवासियों ने जंगल-अधिकारों की वापसी के रूप में। हर समूह अपनी ज़रूरतों को लेकर आंदोलन में आया।

यह रचनात्मकता और स्वतंत्रता आंदोलन की सबसे बड़ी शक्ति भी थी — वास्तविक जनशक्ति — और सबसे बड़ी चुनौती भी। गाँधी जी जैसे नेता बार-बार अपनी तय की सीमाओं को बनाए रखने के लिए संघर्ष करते रहे।

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास केवल महान नेताओं की कहानी नहीं — यह उन लाखों साधारण स्त्री-पुरुषों की कहानी है जिन्होंने आंदोलन को उसकी आत्मा दी।

## खण्ड द — लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 3-4 अंक)

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 80-100 शब्दों में लिखिए।

### 1. प्रथम विश्व युद्ध के भारत पर तत्काल आर्थिक और सामाजिक प्रभाव क्या थे ?

प्रथम विश्व युद्ध ने भारत में गहरा आर्थिक संकट पैदा किया। रक्षा खर्च के लिए युद्ध ऋण और बढ़े हुए करों — सीमा शुल्क और आयकर — से financing हुई। 1913 से 1918 के बीच वस्तुओं की कीमतें दोगुनी से अधिक हो गईं जिससे आम जनता को भारी कठिनाई हुई। गाँवों से 'Forced Recruitment' द्वारा ज़बरदस्ती सैनिक भर्ती की गईं जिसने गुस्से को और भड़काया। 1918-19 और 1920-21 में कई प्रांतों में फसलें नष्ट हुईं। इन्फ्लुएंजा महामारी ने स्थिति और बिगाड़ी। 1921 की जनगणना के अनुसार 12 से 13 करोड़ लोग मारे गए। युद्ध-काल की इन असाधारण कठिनाइयों ने आम भारतीयों को ब्रिटिश विरोध के लिए तैयार किया।

### 2. जस्टिस पार्टी क्या थी और उसने असहयोग आंदोलन में क्या भूमिका निभाई ?

जस्टिस पार्टी मद्रास (तमिलनाडु) में गैर-ब्राह्मण समुदायों का राजनीतिक संगठन था। इसका मानना था कि ब्राह्मणों ने सरकारी नौकरियों, शिक्षा और राजनीतिक शक्ति पर एकाधिकार जमा रखा है। जब असहयोग आंदोलन ने 1920 के परिषद चुनावों के बहिष्कार का आह्वान किया, जस्टिस पार्टी ने इसमें भाग नहीं लिया। उसका तर्क व्यावहारिक था: विधान परिषदों में प्रवेश उन कुछ रास्तों में से एक था जिनसे गैर-ब्राह्मण समुदाय राजनीतिक शक्ति प्राप्त कर सकते थे। यह निर्णय दिखाता है कि विभिन्न सामाजिक समूहों ने अपनी स्थिति के अनुसार आंदोलन में भागीदारी की गणना अलग-अलग की।

### 3. अल्लूरी सीताराम राजू कौन थे और वे लोक-नायक क्यों बने ?

अल्लूरी सीताराम राजू आंध्र प्रदेश की गुड्डेम पहाड़ियों के आदिवासी नेता थे जिन्होंने 1920 के दशक में एक उग्र गुरिल्ला विद्रोह का नेतृत्व किया। औपनिवेशिक सरकार ने विशाल वन क्षेत्रों को बंद कर दिया था जिससे पहाड़ी लोग पशु चराने, लकड़ी और फल इकट्ठे करने से वंचित हो गए। जब सरकार ने उन्हें सड़क निर्माण के लिए बेगार देने पर मजबूर करना शुरू किया, राजू के नेतृत्व में विद्रोह हुआ। उन्होंने पुलिस थानों पर हमले किए। साथ ही लोगों को खादी पहनने और शराब छोड़ने को प्रेरित किया। 1924 में उन्हें पकड़कर फाँसी दी गई। लोकगीतों और कहानियों में वे अमर हो गए।

### 4. बारडोली सत्याग्रह क्या था ? सरदार वल्लभभाई पटेल से इसका क्या संबंध है ?

1928 का बारडोली सत्याग्रह गुजरात के सूरत जिले में भू-राजस्व वृद्धि के विरुद्ध एक सफल किसान आंदोलन था। वल्लभभाई पटेल ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया — सुसंगठित, अनुशासित और पूरी तरह अहिंसक। पटेल ने सरकार के साथ कुशलता से बातचीत की। आंदोलन सफल रहा: सरकार को बढ़ाया हुआ राजस्व वापस लेना पड़ा। इस सफलता ने पटेल को राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध नेता बना दिया। कृषि किसानों ने उन्हें 'सरदार' की उपाधि दी जो जीवनभर उनके नाम का हिस्सा बनी। इस आंदोलन ने यह भी साबित किया कि गाँधीवादी सत्याग्रह स्थानीय स्तर पर ठोस आर्थिक माँगों को पूरा करने में सक्षम है।

### 5. 'पूर्ण स्वराज' का क्या अर्थ था और यह कांग्रेस की पहले की माँगों से कैसे अलग था ?

पूर्ण स्वराज का अर्थ है पूरी आज़ादी — भारत की संपूर्ण संप्रभुता, ब्रिटेन से पूर्ण सम्बन्ध-विच्छेद। दिसम्बर 1929 के लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में इसे औपचारिक रूप दिया गया। यह पहले की माँग 'डोमिनियन स्टेटस' से मौलिक रूप से अलग था। डोमिनियन स्टेटस का अर्थ था ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन — जैसे कनाडा या ऑस्ट्रेलिया की स्थिति। कई उदार कांग्रेसी नेता इसे स्वीकार्य लक्ष्य मानते थे। पूर्ण स्वराज ने इसे पूरी तरह नकारा: इसका अर्थ था एक पूरी तरह संप्रभु भारतीय राज्य जिसका ब्रिटेन से कोई संबंध न हो।

### 6. भारत छोड़ो आंदोलन (1942) का महत्त्व क्या था और यह पूर्व के आंदोलनों से कैसे अलग था ?

भारत छोड़ो आंदोलन सबसे उग्र और सबसे स्वतःस्फूर्त गाँधीवादी आंदोलन था। क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद कांग्रेस ने ब्रिटिश सत्ता की तत्काल वापसी की माँग की। गाँधी जी ने 'करो या मरो' का नारा दिया। ब्रिटिश सरकार ने रात भर में पूरे कांग्रेस नेतृत्व को गिरफ्तार कर लिया। फिर भी आंदोलन नहीं रुका — यही इसकी विशिष्टता थी। पहले के आंदोलनों में केंद्रीय नेतृत्व की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी; इस बार आम छात्रों, मज़दूरों, किसानों और महिलाओं ने स्वयं मोर्चा संभाला। मातंगिनी हाज़रा, कनकलता बरुआ, अरुणा आसफ अली — सब इस आंदोलन में उभरे। यह वास्तव में जन-विद्रोह था।

### 7. 'भारत माता' की छवि ने राष्ट्रवादी भावना के विकास में कैसे योगदान दिया ?

भारत को 'भारत माता' के रूप में चित्रित करना भारतीय राष्ट्रवाद के सबसे शक्तिशाली सांस्कृतिक उपकरणों में से एक था। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने 1870 के दशक में मातृभूमि को समर्पित 'वंदे मातरम्' लिखा। अबनींद्रनाथ टैगोर ने भारत माता को एक शांत, आध्यात्मिक तपस्वी के रूप में चित्रित किया — ज्ञान, भोजन और वस्त्र प्रदान करती हुई। यह छवि popular prints में जगह-जगह फैल गई। जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं को भारत माता की तस्वीर दिल से लगाए दिखाया जाने लगा। मातृभूमि के प्रति भक्ति राष्ट्रवाद का प्रमाण बन गई। इस छवि ने राष्ट्र के अमूर्त विचार को उतना ही भावनात्मक और व्यक्तिगत बना दिया जितना अपनी माँ के प्रति प्रेम।

## 8. सविनय अवज्ञा आंदोलन का गरीब किसानों के साथ संबंध जटिल क्यों था ?

सविनय अवज्ञा आंदोलन और गरीब किसानों का संबंध — एक तरफ से उत्साह, दूसरी तरफ से संरचनात्मक सतर्कता। गरीब किसान अधिकतर छोटे किरायेदार थे जो ज़मींदारों की भूमि पर खेती करते थे। महामंदी ने नकद आय समाप्त कर दी, किराया देना असंभव हो गया। इन्हें समाजवादियों और कम्युनिस्टों ने संगठित कर 'no-rent campaigns' चलाई। परंतु कांग्रेस इन अभियानों का समर्थन करने से बचती थी — उसे डर था कि ज़मींदार नाराज़ होंगे जिन पर वह आर्थिक और संगठनात्मक समर्थन के लिए निर्भर थी। इसलिए गरीब किसानों और कांग्रेस का संबंध हमेशा अनिश्चित रहा — नीचे से उत्साह, ऊपर से सीमित समर्थन।

## खण्ड 3 — दीर्घ उत्तरीय / निबंधात्मक प्रश्न (प्रत्येक 5-6 अंक)

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 150-200 शब्दों में लिखिए। परिचय, मुख्य बिंदु और निष्कर्ष के साथ संरचित उत्तर दें।

### 1. 'गाँधी जी एक जन-आंदोलन बनाने में सफल रहे, पर पूरी तरह एकजुट आंदोलन नहीं बना सके।' असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलन के संदर्भ में समालोचनात्मक मूल्यांकन करें।

**परिचय:** महात्मा गाँधी ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक अभिजन राजनीतिक परियोजना से वास्तविक जन-आंदोलन में बदल दिया। उनके नेतृत्व में कांग्रेस ने लाखों साधारण भारतीयों — किसानों, मज़दूरों, महिलाओं, आदिवासियों — को संगठित किया जो पहले कभी राजनीति में शामिल नहीं हुए थे। फिर भी यह अध्याय बताता है कि गाँधी जी का बनाया आंदोलन असाधारण आंतरिक विविधता वाला था। उसकी व्यापकता ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति थी — और सबसे बड़ी कमज़ोरी भी।

**आंदोलन का जन-चरित्र:** नमक, खादी, चरखा जैसे प्रतीकों ने जाति, वर्ग और धर्म की सीमाओं से परे संवाद किया। दांडी मार्च और उसके बाद का सविनय अवज्ञा आंदोलन वास्तव में राष्ट्रव्यापी था। लगभग एक लाख लोग गिरफ्तार हुए। यह आंदोलन की व्यापकता का प्रमाण है।

**एकता की सीमाएँ:** अवध के किसानों ने स्वराज को ज़मीन के पुनर्वितरण के रूप में समझा — जो कांग्रेस का इरादा नहीं था। असम के बागान मज़दूरों ने इसे बागान से मुक्ति के रूप में। आंध्र के आदिवासियों ने वन-अधिकारों की वापसी के रूप में। अम्बेडकर के नेतृत्व में दलितों ने संवैधानिक सुरक्षा की माँग की जिस पर कांग्रेस धीमी थी। मुस्लिम नेताओं का बड़ा वर्ग खिलाफत गठबंधन के टूटने के बाद दूर हो गया। औद्योगिक मज़दूर वर्ग ने अपनी विशिष्ट माँगों की अनदेखी के डर से दूरी बनाए रखी।

**निष्कर्ष:** गाँधी जी की उपलब्धि वास्तविक और ऐतिहासिक थी — उन्होंने भारत में जन-राजनीति को संभव बनाया। पर उनका आंदोलन विभिन्न समूहों का एक गठबंधन था, जिनमें से हर एक अपनी शर्तों पर शामिल हुआ। कांग्रेस ने जानबूझकर 'स्वराज' को अस्पष्ट रखा — यही इसकी व्यापकता का रहस्य था और इसकी आंतरिक दरार का कारण भी।

### 2. दांडी मार्च (1930) को राजनीतिक रणनीति और जन-लामबंदी का उदाहरण मानते हुए उसके महत्त्व का परीक्षण करें।

**परिचय:** दांडी मार्च आधुनिक इतिहास में अहिंसक प्रतिरोध की सबसे बुद्धिमान राजनीतिक रणनीतियों में से एक माना जाता है। इसे समझने के लिए नमक के चुनाव और उस व्यापक राजनीतिक संदर्भ को समझना ज़रूरी है जिसमें यह यात्रा शुरू हुई।

**नमक क्यों चुना गया:** नमक हर भारतीय उपयोग करता था — अमीर-गरीब, हिंदू-मुसलमान, शहरी-ग्रामीण। नमक कर और सरकारी एकाधिकार एक बुनियादी ज़रूरत पर जुल्म था। समुद्र के पानी से नमक बनाना कोई भी कर सकता था — यह एक साथ प्रतीकात्मक विद्रोह और व्यावहारिक आत्मनिर्भरता दोनों था।

**यात्रा का नाटकीय महत्त्व:** 78 स्वयंसेवकों के साथ 240 मील की यात्रा — 24 दिन — अंतर्राष्ट्रीय मीडिया का अनुसरण। रास्ते में हज़ारों लोग जुड़ते गए। 6 अप्रैल 1930 को दांडी में नमक बनाने की घटना स्वतंत्रता संग्राम की परिभाषित छवियों में से एक बन गई।

**उसके बाद का आंदोलन:** सविनय अवज्ञा आंदोलन भारत के इतिहास का सबसे व्यापक जन-आंदोलन था। नमक क़ानून तोड़े गए, कर देने से इनकार किया, जंगल क़ानून तोड़े गए। लगभग एक लाख लोग गिरफ्तार हुए।

**निष्कर्ष:** दांडी मार्च की उपलब्धि विधायी नहीं थी — नमक क़ानून नहीं बदले। पर यह मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक था: इसने साबित किया कि ब्रिटिश क़ानून की अवज्ञा सम्मान के साथ की जा सकती है। यह स्वतंत्रता संग्राम का एक निर्णायक मोड़ था।

### 3. सांस्कृतिक प्रक्रियाओं — भारत माता, लोक-परंपराएँ और इतिहास की पुनर्व्याख्या — ने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में क्या योगदान दिया ? इस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की सीमाएँ क्या थीं ?

**परिचय:** राष्ट्रवाद केवल एक राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है — यह एक सांस्कृतिक परियोजना भी है। भारत में राष्ट्रवाद के साथ एक समृद्ध सांस्कृतिक उथल-पुथल थी: राष्ट्रीय छवियों का निर्माण, लोक-परंपराओं का पुनरुद्धार और इतिहास का पुनर्लेखन। ये सांस्कृतिक विकास राजनीतिक घोषणापत्रों जितने ही महत्वपूर्ण थे।

**भारत माता:** 'भारत माता' — मातृभूमि के रूप में भारत — राष्ट्रवाद के सबसे शक्तिशाली सांस्कृतिक आविष्कारों में से एक था। बंकिम चंद्र का 'वंदे मातरम्' ने उसे एक गीत दिया। अबनींद्रनाथ टैगोर की पेंटिंग ने उसे एक चेहरा। popular prints में राष्ट्रीय नेताओं को भारत माता की छवि हृदय से लगाए दिखाया जाने लगा। इस छवि ने राष्ट्र के अमूर्त विचार को उतना ही भावनात्मक बना दिया जितना माँ के प्रति प्रेम।

**लोक-परंपराएँ:** राष्ट्रवादी विद्वानों ने लोकगीत, लोककथाएँ और ग्राम परंपराएँ एकत्रित कीं — यह दावा करने के लिए कि भारत के पास अपनी जीवित सांस्कृतिक संपदा है जो उपनिवेशवाद से पहले भी थी। नतेसा शास्त्री का तमिल संग्रह, रवींद्रनाथ का बंगाल में लोकगीत-आंदोलन — इन्होंने राष्ट्रवाद को आम जनता की जड़ों से जोड़ा।

**इतिहास की पुनर्व्याख्या:** ब्रिटिश दावे — 'भारतीय खुद पर शासन करने में अक्षम' — का जवाब भारत के गौरवशाली प्राचीन इतिहास से दिया गया। कला, वास्तुकला, गणित, दर्शन में भारत की महान उपलब्धियाँ प्रस्तुत की गईं।

**सीमाएँ:** यह 'गौरवशाली अतीत' मुख्यतः हिंदू प्रतीकों में था। मुसलमान, दलित और अन्य समुदाय अक्सर इस राष्ट्रवादी कल्पना के हाशिये पर महसूस करते थे। जब मनाया जाने वाला अतीत हिंदू अतीत था, तो अन्य परंपराओं के लोग स्वाभाविक रूप से बाहर महसूस करते थे — यह दरार अंततः विभाजन की त्रासदी में परिणत हुई।

**निष्कर्ष:** संस्कृति ने भारतीय राष्ट्रवाद को भावनात्मक गहराई दी। पर उसने भारतीय समाज के विभाजनों को भी प्रतिबिंबित और कभी-कभी तेज़ किया। राष्ट्र-निर्माण की सांस्कृतिक परियोजना भारत की सबसे बड़ी शक्ति और सबसे गहरी आंतरिक दरार — दोनों थी।

## खण्ड फ — मिलान कीजिए (3 तालिकाएँ)

स्तम्भ 'अ' के प्रत्येक पद को स्तम्भ 'ब' की उचित व्याख्या से मिलाइए। उत्तर-कुंजी नीचे दी गई है।

### तालिका 1 — व्यक्तित्व और उनका योगदान

स्तम्भ अ — व्यक्तित्व	स्तम्भ ब — योगदान / परिचय
1. महात्मा गाँधी	(अ) अवध के किसान आंदोलन के नेता — पहले फिजी में बंधुआ मजदूर रहे थे।
2. बाबा रामचंद्र	(ब) 1930 में दलित वर्ग संघ स्थापित किया; द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में गाँधी जी से टकराए।
3. अल्लूरी सीताराम राजू	(स) असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलन के नेता; सत्याग्रह को जन-राजनीतिक हथियार बनाया।
4. वल्लभभाई पटेल	(द) स्वदेशी आंदोलन के दौरान भारत माता को एक शांत आध्यात्मिक तपस्वी के रूप में चित्रित किया।
5. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर	(इ) 1928 का बारडोली सत्याग्रह नेतृत्व किया; 'सरदार' की उपाधि मिली।
6. मुहम्मद अली	(फ) लाहौर कांग्रेस 1929 की अध्यक्षता की; पूर्ण स्वराज की माँग औपचारिक की।
7. जवाहरलाल नेहरू	(ग) आंध्र प्रदेश की गुडेम पहाड़ियों में आदिवासी विद्रोह का नेतृत्व किया; 1924 में फाँसी।
8. अबनींद्रनाथ टैगोर	(ह) खिलाफत आंदोलन के सह-नेता; ओटोमन खलीफा की शक्तियों की रक्षा के लिए लड़े।
9. बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय	(ज) 1870 के दशक में 'वंदे मातरम्' की रचना की।
10. जनरल डायर	(ट) 13 अप्रैल 1919 को जलियाँवाला बाग में गोली चलाने का आदेश दिया।

उत्तर-कुंजी — तालिका 1: 1→(स) 2→(अ) 3→(ग) 4→(इ) 5→(ब) 6→(ह) 7→(फ) 8→(द) 9→(ज) 10→(ट)

### तालिका 2 — घटनाएँ और वर्ष

स्तम्भ अ — घटना	स्तम्भ ब — वर्ष
1. चम्पारण सत्याग्रह	(अ) मार्च 1931
2. रॉलट एक्ट पारित	(ब) 1927
3. जलियाँवाला बाग हत्याकांड	(स) 12 मार्च 1930
4. असहयोग आंदोलन आरंभ	(द) 1917
5. चौरी चौरा की घटना	(इ) दिसम्बर 1929
6. FICCI की स्थापना	(फ) 6 अप्रैल 1930
7. लाहौर कांग्रेस — पूर्ण स्वराज	(ग) फरवरी 1922
8. दांडी मार्च आरंभ	(ह) 1919
9. गाँधी जी दांडी पहुँचे — नमक बनाया	(ज) जनवरी 1921
10. गाँधी-इरविन समझौता	(ट) 13 अप्रैल 1919

उत्तर-कुंजी — तालिका 2: 1→(द) 2→(ह) 3→(ट) 4→(अ) 5→(ग) 6→(ब) 7→(इ) 8→(स) 9→(फ) 10→(अ)

### तालिका 3 — प्रमुख शब्दावली और परिभाषाएँ

स्तम्भ अ — शब्द	स्तम्भ ब — परिभाषा / स्पष्टीकरण
1. सत्याग्रह	(अ) बिना किसी भुगतान के किया गया ज़बरदस्ती का श्रम — ज़मींदार या सरकार के लिए।
2. बेगार	(ब) किसी चीज़ को खरीदने, उपयोग करने या गतिविधि में भाग लेने से इनकार — विरोध के रूप में।
3. बहिष्कार	(स) औपनिवेशिक राज्य द्वारा ग्रामीणों को ज़बरदस्ती सेना में भर्ती करने की प्रक्रिया।

4. Forced Recruitment	(द) दुकान, कारखाने या कार्यालय के प्रवेश द्वार पर धरना देकर लोगों को अंदर जाने से रोकना।
5. धरना (Picket)	(इ) मतदान का अधिकार।
6. मताधिकार	(फ) सत्य और अहिंसा पर आधारित संघर्ष — 'आत्मबल'।
7. खिलाफत	(ग) पूर्ण स्वतंत्रता — लाहौर कांग्रेस 1929 में औपचारिक माँग।
8. पूर्ण स्वराज	(ह) प्रथम विश्व युद्ध के बाद ओटोमन खलीफा की शक्तियों की रक्षा के लिए आंदोलन।
9. स्वदेशी	(झ) अपने देश में बनी वस्तुओं का उपयोग; विदेशी आयात का बहिष्कार।
10. इनलैंड एमिग्रेशन एक्ट	(ट) 1859 का कानून जो असम के बागान मजदूरों को बिना अनुमति बागान छोड़ने से रोकता था।

उत्तर-कुंजी — तालिका 3: 1→(फ) 2→(अ) 3→(ब) 4→(स) 5→(द) 6→(इ) 7→(ह) 8→(ग) 9→(झ) 10→(ट)

## खण्ड छ — UPPSC / UPSC संबंधित प्रश्न (विशेष खण्ड)

UPPSC और UPSC दोनों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रश्न नियमित रूप से आते हैं। UPPSC के लिए विशेष रूप से अवध किसान आंदोलन, बारडोली सत्याग्रह और UP की भूमिका पर प्रश्न महत्वपूर्ण हैं।

**एक ज़रूरी बात:** UPPSC (उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग) और UPSC (संघ लोक सेवा आयोग) दोनों में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से प्रश्न नियमित रूप से आते हैं। इस खण्ड में वे विश्लेषणात्मक, संदर्भ-समृद्ध उत्तर दिए गए हैं जिन्हें सिविल सेवा परीक्षाएँ पुरस्कृत करती हैं।

### UPPSC प्र.1. अवध किसान आंदोलन (1920-22) का असहयोग आंदोलन के संदर्भ में क्या महत्त्व था ? उसके लक्ष्य कांग्रेस नेतृत्व से कैसे भिन्न थे ?

**संदर्भ:** असहयोग आंदोलन के साथ विकसित हुआ अवध किसान आंदोलन अभिजन राष्ट्रवादी लक्ष्यों और भारत की ग्रामीण गरीबों की तत्काल कृषि आकांक्षाओं के बीच के तनाव का एक प्रकट उदाहरण है।

**आंदोलन की प्रकृति:** अवध में किसान आंदोलन का नेतृत्व बाबा रामचंद्र ने किया — एक संन्यासी जो पहले फिजी में बंधुआ मज़दूर रह चुके थे। आंदोलन मुख्यतः तालुकदारों के विरुद्ध था जो मनमाना लगान, बेगार और विभिन्न अवैध अधिभार वसूलते थे। किसानों को ज़मीन का कोई अधिकार नहीं था, उन्हें किसी भी समय बेदखल किया जा सकता था। जून 1920 में जवाहरलाल नेहरू ने अवध के गाँवों का दौरा किया। अक्टूबर 1920 में 'अवध किसान सभा' की स्थापना हुई। एक महीने में 300 से अधिक शाखाएँ बन गईं।

**किसान लक्ष्य और कांग्रेस लक्ष्य में अंतर:** जब अगले वर्ष असहयोग आंदोलन शुरू हुआ, तो कांग्रेस ने अवध किसान संघर्ष को व्यापक राष्ट्रवादी आंदोलन में समेटने की कोशिश की। परंतु यह आंदोलन उस दिशा में जाने लगा जो कांग्रेस को अस्वीकार्य था: तालुकदारों के घर लूटे गए, अनाज के भंडार खाली किए गए, बाज़ार पर कब्ज़ा किया गया। स्थानीय नेताओं ने किसानों को बताया कि 'गाँधी जी ने कहा है — अब ज़मीन हमारी होगी।' महात्मा का नाम एक जादुई आवाज़ की तरह गूँज रहा था। कांग्रेस की प्राथमिक चिंता थी — औपनिवेशिक शासन; अवध के किसानों की प्राथमिक चिंता थी — स्थानीय ज़मींदार। यह मौलिक अंतर कभी पूरी तरह दूर नहीं हुआ।

**महत्त्व:** अवध किसान आंदोलन भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन की दो महत्त्वपूर्ण सच्चाइयाँ बताता है: पहली — आंदोलन बहुत अलग-अलग शिकायतों वाले लोगों को एक साथ लामबंद कर सकता था; दूसरी — यह लामबंदी अंततः कमज़ोर थी क्योंकि विभिन्न समूह स्वतंत्रता से अलग-अलग चीज़ें चाहते थे। ज़मींदार और संपत्तिशाली वर्गों पर कांग्रेस की संरचनात्मक निर्भरता ने गरीब किसानों की 'no-rent campaigns' को समर्थन देने से उसे रोका — यह विरोधाभास पूरे स्वतंत्रता संग्राम में बना रहा।

### UPPSC प्र.2. भारत छोड़ो आंदोलन 1942 का परीक्षण करें। यह सबसे स्वतःस्फूर्त गाँधीवादी आंदोलन क्यों माना जाता है ?

**संदर्भ:** भारत छोड़ो आंदोलन 1942 द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि और क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद शुरू हुआ। 1942 तक जापानी सेना दक्षिण-पूर्व एशिया में आगे बढ़ रही थी और कई भारतीयों को डर था कि ब्रिटिश भारत में ही ढह जाएगा।

**प्रस्ताव और तत्काल परिणाम:** 14 जुलाई 1942 को वर्धा में कांग्रेस कार्यकारिणी ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास किया — ब्रिटिश सत्ता की तत्काल और पूर्ण वापसी की माँग। 8 अगस्त 1942 को बम्बई के गोवालिया टैंक मैदान में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने इसकी पुष्टि की। गाँधी जी ने अपना प्रसिद्ध 'करो या मरो' भाषण दिया: "हम या तो भारत को आज़ाद कराएंगे या इसी कोशिश में मर जाएंगे।" रात भर में ब्रिटिश सरकार ने सम्पूर्ण कांग्रेस नेतृत्व को गिरफ्तार कर लिया।

**सबसे स्वतःस्फूर्त क्यों:** यही इस आंदोलन की विशेषता थी। पहले के आंदोलनों — 1920-22 और 1930-34 — में केंद्रीय नेतृत्व का मार्गदर्शन महत्त्वपूर्ण था। इस बार नेतृत्व के जेल जाने के बावजूद आंदोलन नहीं रुका — बल्कि तेज़ हुआ। छात्रों, मज़दूरों और किसानों ने बिना किसी केंद्रीय दिशा के राज्य तंत्र को कई प्रांतों में ठप कर दिया। रेल लाइनें उखाड़ी गईं, तार काटे गए, सरकारी इमारतों पर हमले हुए।

**स्थानीय नेता और महिलाएँ:** मातंगिनी हाज़रा (बंगाल), कनकलता बरुआ (असम), अरुणा आसफ अली और राम मनोहर लोहिया जैसे स्थानीय नेता उभरे। ये स्थापित कांग्रेसी नेता नहीं थे बल्कि वे आम नागरिक थे जिन्होंने असाधारण साहस दिखाया।

**महत्त्व:** भारत छोड़ो आंदोलन ने साबित किया कि 1942 तक स्वतंत्रता की माँग भारतीय समाज में गहराई से समाई हुई थी। ब्रिटिश सरकार ने एक लाख से अधिक लोगों को गिरफ्तार कर आंदोलन को एक वर्ष में दबाया — पर राजनीतिक संदेश अमिट था: भारत जाना चाहता था।

### UPPSC प्र.3. गाँधी-अम्बेडकर विवाद का आलोचनात्मक परीक्षण करें। यह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की सीमाओं के बारे में क्या प्रकट करता है ?

**पृष्ठभूमि:** अलग निर्वाचन क्षेत्र को लेकर गाँधी और डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का 1932 का विवाद स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में सबसे महत्त्वपूर्ण और सर्वाधिक बहस-किया-गया प्रसंगों में से एक है। इसने राष्ट्रवादी परियोजना के हृदय में एक मौलिक तनाव उजागर किया।

**अम्बेडकर की स्थिति:** अम्बेडकर ने तर्क दिया कि दलितों को 'अलग निर्वाचन क्षेत्र' की ज़रूरत है — जिनमें केवल दलित मतदाता दलित प्रतिनिधि चुनें। बिना इस संवैधानिक सुरक्षा के दलित उम्मीदवार हमेशा उच्च जाति के बहुसंख्यक मतदाताओं पर निर्भर रहेंगे — और इसलिए उन्हीं के हितों के प्रति उत्तरदायी। गोलमेज सम्मेलनों में अम्बेडकर ने यह माँग दृढ़ता से रखी और 1932 में ब्रिटिश सरकार ने इसे स्वीकार किया।

**गाँधी जी की स्थिति और अनशन:** गाँधी जी ने यरवदा जेल में आमरण अनशन की घोषणा की। उनका तर्क — अलग निर्वाचन क्षेत्र हिंदू समाज को जाति की रेखाओं पर स्थायी रूप से विभाजित करेंगे और अस्पृश्यता उन्मूलन को कमज़ोर करेंगे।

**पूना समझौता:** अम्बेडकर पर भारी नैतिक दबाव पड़ा। यदि गाँधी जी मर जाते तो दलित समुदाय पर हिंसा की प्रबल आशंका थी। अम्बेडकर ने समझौता किया — दलितों (बाद में अनुसूचित जातियों) को प्रांतीय और केंद्रीय विधान परिषदों में अधिक आरक्षित सीटें मिलीं — पर संयुक्त निर्वाचन क्षेत्र में।

**यह क्या प्रकट करता है:** यह प्रसंग राष्ट्रीय आंदोलन की गहरी सीमाएँ उजागर करता है। यहाँ तक कि सबसे प्रगतिशील राष्ट्रवादी नेता भी दलित समुदायों को अपनी राजनीतिक सशक्तिकरण की शर्तें स्वयं तय करने की अनुमति देने को तैयार नहीं थे। 'राष्ट्रीय एकता' का निर्माण इस तरह हुआ कि सबसे हाशिये पर रहने वालों से बार-बार कहा गया — अपनी विशिष्ट माँगें बड़े कारण के लिए छोड़ो।

अम्बेडकर ने बाद में 'जाति का उन्मूलन' (1936) में गाँधी जी और कांग्रेस की तीखी आलोचना की। 1956 में बौद्ध धर्म ग्रहण करना उनका हिंदू-प्रधान राष्ट्रवादी ढाँचे की अंतिम अस्वीकृति था।

---

**UPPSC प्र.4. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में 'आर्थिक राष्ट्रवाद' से आप क्या समझते हैं? भारतीय व्यापारी वर्ग ने आंदोलन में कैसे योगदान दिया?**

**आर्थिक राष्ट्रवाद की परिभाषा:** भारत के स्वतंत्रता संग्राम में 'आर्थिक राष्ट्रवाद' उस विश्वास को कहते हैं कि राजनीतिक स्वतंत्रता और आर्थिक स्वतंत्रता अविभाज्य हैं। इसमें शामिल था — विदेशी माल का बहिष्कार, भारतीय उद्योग और हस्तशिल्प को बढ़ावा, और उन औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों को चुनौती जिन्होंने भारत को कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता और ब्रिटिश उत्पादों का बाज़ार बना दिया था।

**ऐतिहासिक जड़ें:** आर्थिक राष्ट्रवाद की जड़ें 1905-08 के स्वदेशी आंदोलन में हैं जब बंगाल विभाजन ने ब्रिटिश माल के देशव्यापी बहिष्कार की लहर उठाई। चरखा और खादी स्वावलंबन के प्रतीक बने।

**व्यापारी वर्ग की भूमिका:** प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय व्यापारी और उद्योगपति काफी शक्तिशाली हुए। पर वे औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों से चिढ़े थे — स्टर्लिंग-रुपया विनिमय दर, टैरिफ नीतियाँ, ब्रिटिश प्रबंध अभिकरणों का वर्चस्व। 1927 में जी.डी. विडला और पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास जैसे उद्योगपतियों ने FICCI (भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंडल संघ) बनाया। FICCI ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर औपनिवेशिक नियंत्रण पर हमला किया और सविनय अवज्ञा आंदोलन को आर्थिक समर्थन दिया।

**तनाव और सीमाएँ:** भारतीय व्यापारी वर्ग का कांग्रेस को समर्थन सशर्त था — वे पूँजीवादी स्वराज चाहते थे, न समाजवादी। जब कांग्रेस में समाजवादी विचारों और श्रमिक संघर्षों का प्रभाव बढ़ा, व्यापारी वर्ग का उत्साह कम हुआ। भारतीय पूँजीवाद और भारतीय राष्ट्रवाद का गठबंधन सुविधा का था — विश्वास का नहीं।

---

**UPPSC प्र.5. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने 'भारत माता' की छवि को कैसे समझा और प्रस्तुत किया? इस प्रस्तुतिकरण के राजनीतिक निहितार्थ क्या थे?**

**उदगम:** 'भारत माता' — मातृभूमि के रूप में भारत — भारतीय राष्ट्रवाद के सबसे विशिष्ट और राजनीतिक रूप से शक्तिशाली सांस्कृतिक आविष्कारों में से एक था। इसकी सबसे प्रसिद्ध साहित्यिक अभिव्यक्ति बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का 'वंदे मातरम्' था जो 1870 के दशक में रचा गया और 'आनंदमठ' (1882) में शामिल हुआ।

**दृश्य प्रस्तुतिकरण:** भारत माता का सबसे प्रसिद्ध दृश्य रूप अबनींद्रनाथ टैगोर ने स्वदेशी आंदोलन के दौरान दिया। टैगोर ने उन्हें एक तपस्वी, आध्यात्मिक, शांत आकृति के रूप में चित्रित किया — ज्ञान, भोजन, वस्त्र और रुद्राक्ष की माला प्रदान करती हुई। यह जानबूझकर किया गया कलात्मक चुनाव था। बाद के popular prints में भारत माता को शेर के साथ खड़ी, त्रिशूल लिए, राष्ट्रीय ध्वज में लिपटी दिखाया गया — एक अधिक उग्र छवि।

**राजनीतिक निहितार्थ:** भारत माता की छवि ने कई राजनीतिक कार्य एक साथ किए। इसने राष्ट्र के अमूर्त विचार को भावनात्मक रूप से तत्काल और व्यक्तिगत बना दिया — मातृभूमि से प्रेम माँ के प्रति प्रेम जितना स्वाभाविक लगने लगा। इसने राष्ट्रवाद को एक आध्यात्मिक आयाम दिया। और इसने एक दृश्य शब्दावली प्रदान की जो साक्षरता की बाधाओं को पार कर सकती थी।

**सीमाएँ:** परंतु भारत माता की छवि में एक महत्वपूर्ण सीमा थी। प्रतीक-चिह्न मुख्यतः हिंदू परंपरा से आए थे — देवी, पवित्र कमल, त्रिशूल, केसरिया वस्त्र। मुसलमान, दलित और ईसाई कभी-कभी महसूस करते थे कि यह 'माँ' उनकी माँ नहीं — कि कल्पित किया जाने वाला राष्ट्र एक हिंदू राष्ट्र था।

राष्ट्रवाद की इस समावेशी आकांक्षा और उसके प्रभावशाली हिंदू प्रतीकों के बीच का तनाव कभी नहीं सुलझा — और अंततः यही विभाजन की त्रासदी की एक जड़ बनी।

---

### शिक्षक की क़लम से — ओम सिकरवार

*भारत का स्वतंत्रता संग्राम महान नेताओं की मुट्ठी भर कहानी नहीं है — यह लाखों साधारण स्त्री-पुरुषों की कहानी है जिन्होंने सुरक्षा की जगह साहस को चुना। जब आप अवध के उन किसानों के बारे में पढ़ते हैं जिन्हें विश्वास था कि 'गाँधी राज आ रहा है', असम के उन बागान मज़दूरों के बारे में जो घर के लिए चले और कभी नहीं पहुँचे, उन महिलाओं के बारे में जिन्होंने पहली बार घर की दहलीज़ पार की — तो याद रखिए: ये सच्चे इंसान थे, सच्चे फ़ैसले लेते हुए, सच्चे ख़तरों में, इतिहास पढ़ने का असली मक़सद यही है — यह समझना कि आज़ादी की क़ीमत क्या होती है, मेहनत करें, ध्यान से सोचें, और अपनी आज़ादी को कभी हल्के में मत लें।*